विद्या भवन बालिका विद्यापीठ,

शक्ति उत्थान आश्रम,लखीसराय।

विषय हिन्दी वर्ग-दशम

दिनांक- 21-09–2021

***पद परिचय (*व्याकरण)**

बच्चों!

अभी तक आपने विशेषण पद परिचय पढ़ा।अब आगे क्रिया पद परिचय पढ़ेंगें।

क्रिया का पद परिचय:- क्रिया का पद परिचय करते समय क्रिया का प्रकार, वाच्य, काल, लिंग, वचन, पुरुष, और क्रिया से संबंधित शब्द को लिखना पड़ता है।
उदाहरण 1- राम ने रावण को मारा।
मारा - क्रिया, सकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, भूतकाल। 'मारा' क्रिया का कर्ता राम तथा कर्म रावण।

उदाहरण 2- श्याम ने खीर खाकर पुस्तक पढ़ी।
इस वाक्य के 'खाकर' और 'पढ़ी' क्रिया पद हैं।
इनका पद परिचय इस प्रकार होगा :
खाकर : पूर्वकालिक क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, इसका कर्म 'खीर' है।
पढ़ी : सकर्मक क्रिया, कर्मवाच्य, सामान्य भूतकाल, निश्चयार्थ प्रकार, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, इसका कर्त्ता 'राम' तथा कर्म 'पुस्तक' हैं।

(5) क्रिया विशेषण का पद परिचय - क्रिया विशेषण का पद परिचय देते समय,क्रियाविशेषण का प्रकार (रीतिवाचक, परिमाणवाचक, स्थान वाचक , कालवाचक) और उस क्रिया पद का उल्लेख करना होता हैं, जिस क्रियापद की विशेषता प्रकट करने के लिए क्रिया विशेषण का प्रयोग हुआ है।

उदाहरण1- लड़की उछल कूद कर रही हैं।
इस वाक्य में 'उछल कूद' क्रियाविशेषण है।
इस क्रियाविशेषण का पद परिचय निम्न तरीके से होगा-
उछल कूद : रीतिवाचक क्रियाविशेषण है जबकि 'कर रही है' क्रिया की विशेषता बतलाता है।

उदाहरण 2- बहुत जल्द मत जाओ।
इस वाक्य में 'बहुत' और 'जल्द' क्रिया-विशेषण पद हैं।
इनका पद परिचय इस प्रकार होगा।
बहुत : परिमाणवाचक क्रियाविशेषण और जल्द का गुणबोधक है।
जल्द : समयवाचक क्रियाविशेषण और क्रिया के काल को बताता है।

संबंधबोधक

ऐसे अविकारी शब्द जो वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं, संबंधबोधक कहलाते हैं; जैसे-
रूपाणि के साथ रीतिका सूरत गई।
आकाश के पीछे कुत्ता भागने लगा।
टहनी के ऊपर तोते बैठे हैं।
बहन की तरह भाई भी समझदार है।

समुच्चयबोधक (योजक)

ऐसे अविकारी शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को जोड़ते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे-
अरुणिमा गिटार बजाएगी और प्रिया गाएगी।
चाय पिएँगे या कॉफ़ी पिएँगे।
ऋचा आ गई परंतु ध्रुव नहीं आया।
पहला प्रश्न करो अथवा दूसरा करो।

समुच्चयबोधक के भेद

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक-वे समुच्चयबोधक शब्द जो दो समान स्तर वाले उपवाक्यों और शब्दों को जोड़ते हैं, समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
संयोजक-मुकेश और सुधा भाषण देंगे।
किरण खेलती तो है परंतु डर-डरकर खेलती है।
विभाजक-डोसा खाओ चाहे इडली खाओ।
गृह कार्य कर लो नहीं तो अध्यापिका डाँटेगी।

विरोधदर्शक-भाषण दे दिया परंतु पुरस्कार नहीं मिला।
सड़क टूटी थी इसलिए स्कूटर सवार गिर गया। (परिणामदर्शक)

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक-वे समुच्चयबोधक शब्द जो एक प्रमुख उपवाक्य और एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
कारणवाचक-चाय नहीं बनी क्योंकि दूध न था। - सोहिता श्रेष्ठ गायिका है इसलिए सम्मान पाती है।
स्वरूपवाचक-असीम सोचता था कि विक्रम प्रथम आएगा। - विकास मूर्ख नहीं है जो व्यर्थ झगड़ा करे।
उद्देश्यवाचक-मिस्त्री को बुलाओ जो कि नल ठीक करे। - इंदु मंच पर गई ताकि कविता सुना सके।
संकेतवाचक-यदि रुपए होते तो फ़िल्म देखते। - जब पापा आएँगे तब मॉल जाएँगे।

विस्मयादिबोधक- ऐसे शब्द जो विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा और प्रशंसा आदि भावों को प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

- हर्ष-आह, वाह आदि।
- प्रशंसा-वाह, ओहो, सुंदर आदि।
- विस्मय-अरे, हैं, क्या आदि।
- शोक-उफ़, हाय, आह आदि।
- संबोधन-अरे, अजी, अबे आदि।
- चेतावनी-बचो, हटो, सावधान आदि।
- अभिवादन-प्रणाम, नमस्ते, नमस्कार आदि।
- घृणा-छिः, धिक्कार आदि।